मूल्य रू. ५-००

मासिक

श्री स्वामिनारायण

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख • सलंग अंक १८७ • फरवरी-२०१२

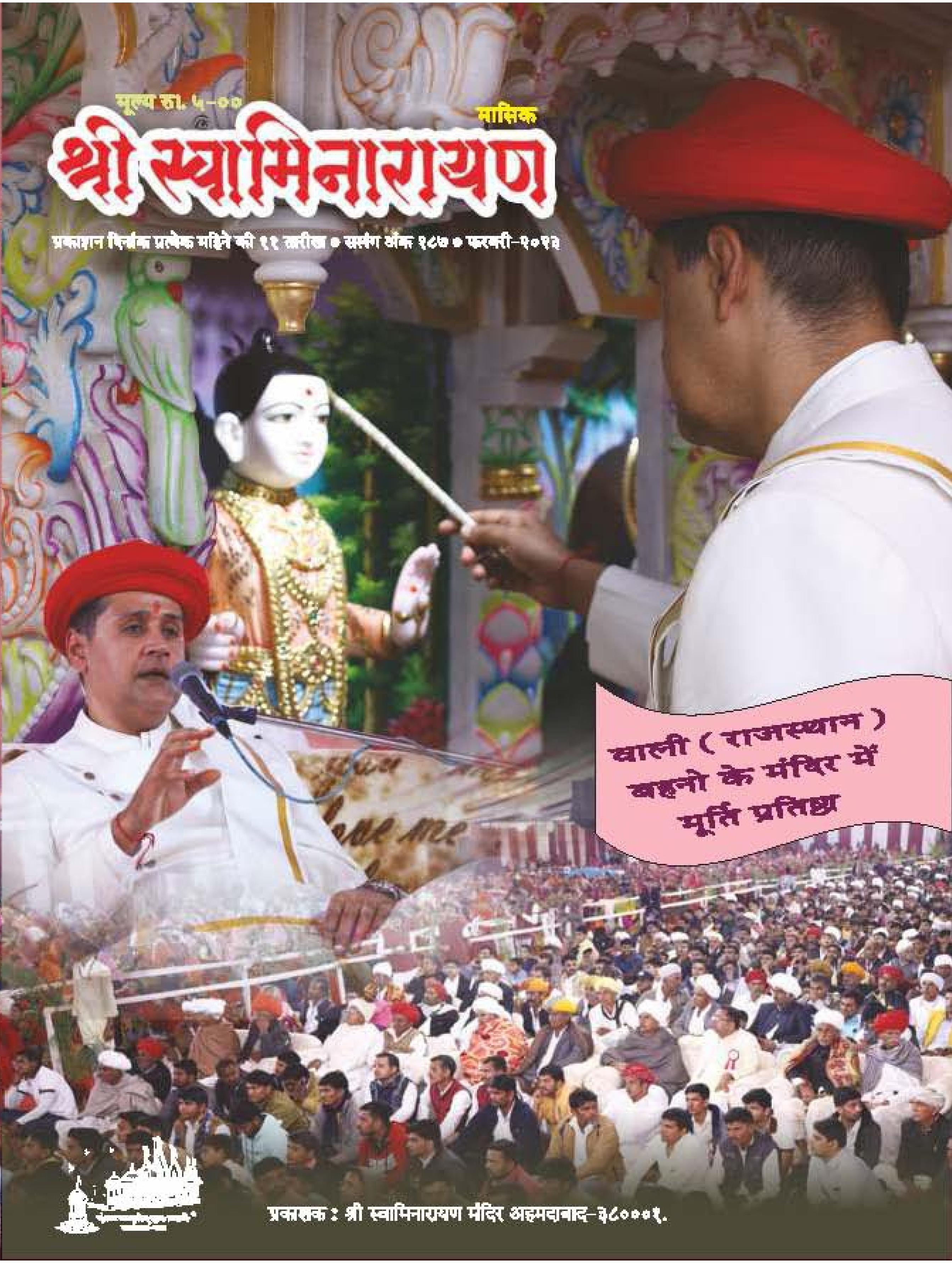

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

बापुनगर एप्रोच बहनो के मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते प.पू. महाराजश्री।

सोनारडा मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते प.पू. लालजी महाराजश्री।

कुम्हडपल में शाकोत्सव करते प.पू. लालजी महाराजश्री।

महिसा मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर सभा को आशीर्वाद देते प.पू. महाराजश्री।

नवा वाडज मंदिर में शाकोत्सव के अवसर पर सभा में दर्शन देते प.पू. लालजी महाराजश्री।

न्यु राणीप मंदिर में शाकोत्सव के अवसर पर सभा में आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री।

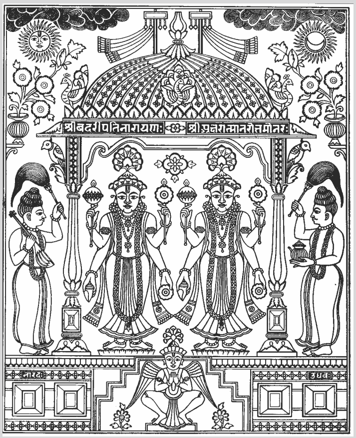

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १६ ● अंक : १८७ ● फरवरी-२०२३

अ नु क्र म णि का

०१. अस्मदीयम् ०४

०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ०५

०३. स.गु. निष्कुलानंद स्वामी की काव्य वैभव ०७

०४. भूमिदान ०९

०५. नारदीपुर १२

०६. श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से १३

०७. भक्ति सुधा १४

०८. सत्संग समाचार १६

अस्मदीयम्

भक्ति के दिव्यमार्ग पर चलने वाले भगवान के भक्त अपने आराध्यदेव को खुश करने के लिये जो साधन है। उसे दृढ करे । जिस कारण से भक्ति में कोई अवरोध नही आये । तथा सुख पूर्वक भगवान की भजन करके आत्मा का कल्याण कर सके। इसके लिये हमें अपने कर्म का विचार करना चाहिए। हमें कैसे साधनो के साथ अनुकूलता के साथ भगवान का नाम ले सकते है। श्रीजी महाराजने कहा है कि हमे अपने कर्मो को समझकर उसी प्रकार की भक्ति के में तन्मय रहना चाहिए । वे भाग स्वरुप निष्ठा, आत्मज्ञान, लोभहीनता, निष्कामी, निःस्पृही, निःस्वादी, निराभिमान ये वर्तमान के पाँच भाग को दृढ करने की आज्ञा किये है। फिर अपने भाग की बात किये है। गढडा प्रथम प्रकरण ८ वचनामृत में इस प्रकार कहे है। ''श्री नरनारायण के प्रताप से हम ऐसा व्यवहार करते है कि मै आत्मा हूँ। अभेद हूँ। सच्चिदानंद हूँ। और हमारी जो बडाई है। जो तेज है। वह श्री नरनारायण की उपासना से है। लेकिन हमारे वस्त्र तथा अमूल्य आभूषण तथा परब, पालखी, हाथी, घोडा उसकी सवारी से बडाई नही है। इस संसार के सभी मनुष्य सभी राजा एवम् सत्संगी हाथ जोड कर खडा रहे। इससे भी हम बडे नही बनना है।'' भगवान श्रीहरि तो स्वयं परमात्मा है। यह अपने आश्रितो के लिये उदाहरण देकर कहते है। इस लिये इस संसार में भगवान श्री नरनारायण की उपासना भक्ति और आश्रय लेने से इस संसार मे जीवात्मा को मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस बात को ध्यान में रखकर श्रीहरि का सहारा करले । यही मानव जन्म की सार्थकता है।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की रुपरेखा (जनवरी-२०२३)

२० से २६ श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का २०० वाँ पाटोत्सव ''उत्सव'' अपने सानिध्य में पूर्ण किये।

२८ श्री स्वामिनारायण मंदिर महिसा पाटोत्सव के अवसर पर आगमन।

२९ श्री स्वामिनारायण मंदिर (एप्रोच) बापुनगर बहनो के मंदिर में श्री घनश्याम महाराज का पुनः पाटोत्सव अपने कर कमलो से पूर्ण किये।

३० श्री स्वामिनारायण मंदिर गवाडा ४१ वे पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जनवरी-२०२३)

१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर श्री घनश्याम महाराज की षष्टिपूर्ति महोत्सव पर आगमन।

१८ श्री स्वामिनारायण मंदिर सोनारडा मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा अपने कर कमलो से पूर्ण किये।
श्री स्वामिनारायण मंदिर विसनगर छोटे श्रीहरिकृष्ण महाराज के शतवार्षिक पाटोत्सव पर पधारना।

१९ श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली ''उत्सव'' की मिटींग अपने अध्यक्ष पद से पूर्ण किये।

२० से २६ श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली श्री राधाकृष्ण हरिकृष्ण महाराज के २०० वे पाटोत्सव ''उत्सव'' आप के सानिध्य में उल्लासपूर्वक किया गया।

२८ श्री स्वामिनारायण मंदिर गवाडा ४१ वे पाटोत्सव पर पधारना।

२९ श्री स्वामिनारायण मंदिर नवावाडज तथा कुबडथल गाँव में शाकोत्सव के अवसर पर पधारना।

३० श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।

३१ श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा (अहमदाबाद) २९ वे पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेवनो २०१मो पाटोत्सव

सर्वोपरी आराध्यदेव श्री स्वामिनारायण भगवान ने सर्वप्रथम सम्प्रदाय का सर्व प्रथम अहमदाबाद में तीन शिखर वाला भव्य महामंदिर निर्माण किये। संवत १८७८ के फाल्गुन सुद-३ के दिन स्वस्वरुप ऐसे भरतखंड के राजाधिराज श्री नरनारायणदेव ने स्वयं हाथ में लेकर प्रस्थापित करके कोरोडो जीव के कल्याण हेतु मार्ग प्रशस्त किये।

श्री नरनारयणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शुभ आज्ञा से उसी तरह प.पू. बडे महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री भविष्य के आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री एवम् समस्त धर्मकुलक ी खुशी से तथा स.गु. महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणधासजी के सुंदर मार्गदर्शन से परम कृपालु श्री नरनारायणदेव के २०१ वे पाटोत्सव महोत्सव फाल्गुन सुद-३ ता. २२-०२-२०२३ दिन बुधवार को उल्लासपूर्वक मनाया जायेगा।

इस अवसर पर देवदर्शन, धर्मकुल दर्शन का लाभ प्राप्त करने के लिये आप सभी मित्र मंडल सहित हेतु निमंत्रण भेज रहा हूं।

ली. महंत स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी

श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद

कथा के वाचक श्री महंत स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी

पाटोत्सव महोत्सव के मंगल कार्यक्रम :

महा वद-३० ता. २०-०२-२०२३ सोमवार

श्री नरनारायणदेव महात्म कथा — प्रात: ८ से १०-३० तक, शायं ४ से ६ बजे तक

फाल्गुन सुद-१/२ ता. २१-०२-२०२३ मंगलवार

कथा प्रात: ८ बजे से १०-३० तक

महाविष्णुयज्ञ०हरियज्ञ की शुरुआत — प्रात: ९ बजे से

फाल्गुन सुद-३ ता. २०-०२-२०२३ बुधवार

मंगला आरती	प्रात: ५-३० बजे
ठाकुरजी की पूजा	प्रात: ६-०० ले ६-३० बजे
श्री नरनारायणदेव का सोलहश्रृंगार महाभिषेक	प्रात: ६-३० से ७-०० बजे
कथा और पाटोत्सव की प्रसंगोचित सभा	प्रात: ७-३० बजे तक
अन्नकूट और राजभोग आरती	प्रात: १०-३० बजे तक
अन्नकूट दर्शन	प्रात: ११-३० से ३-०० बजे तक

સ.ગુ. નિષ્કુળાનંદ સ્વામીનો કાવ્ય વૈભવ

- महादेवप्रसाद जोषी (न्यु राणीप)

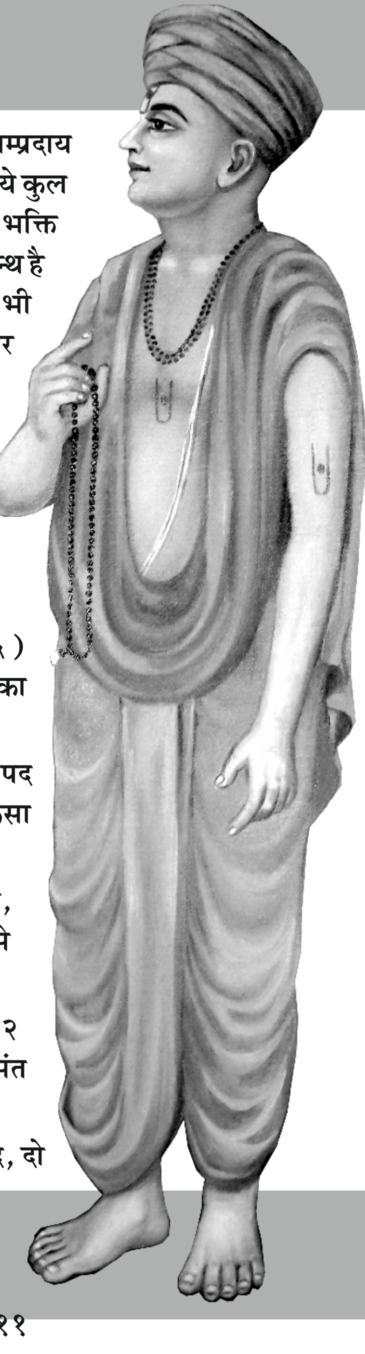

अपने स्वामिनारायण समप्रदाय में वैराग्य मूर्ति स.गु. निष्कुलानंद का सम्प्रदाय के लिये साहित्य का महत्व है। निष्कुलानंद काव्य के अर्न्तगत उनकी पदय रचनाये कुल २३ है । उसमे से १६ गुजराती में शेष सात हिन्दी भाषा में है । इसमें से 'भक्ति चिंतामणी' नाम के १६४ प्रकरणो के कुल ८५२७ दोहे, चौपाई वाले शिरमौर ग्रन्थ है । उसकी रचना गढपुर में संवत १८८७ में किये थे । उन्होने ३००० जितने कीर्तन भी लिखे है । स.गु. निष्कुलानंद स्वामी का सम्प्रदाय का काव्य वैभव अद्वितीय और अजोड है । उनके काव्य कीर्तन में भगवान स्वामिनारायण के प्रति अखंड अनुराग दिखाई देता है।

अन्य २२ काव्य रचना की सूचना निम्नानसुरा है।

(१) यमदंड : यह गुजराती भाषा में पदय रुप से संवत १८६० मे लिखी गयी । जिसमें २० कडक, १ धोल और ११४४ चरण समावेश है । स्वामीजी की यह प्रथम पद्य रचना है। यमपुरी, नरक यातना का वर्णन है।

(२) पुरुषोत्तम प्रकाश : यह पद्यकृति गुजराती भाषा में है। जिसमें (५५) प्रकरण है । प्रत्येक प्रकरण में ४ चरण है । इसमें स्वामी ने श्रीजी महाराज का माहात्म्य कहे है।

(३) स्नेह गीता : यह गुजराती पद्य कृति है। जिसमें ४४ कडवा और ११ पद है। इस में ४९० चरण है। इस रचना में भगवान स्वामिनारायण के भक्तो को कैसा स्नेह करना चाहिए। उसे लिखा गया है।

(४) वचनविधि : यह पद्य कृति गुजराती भाषा में है। इसमें ५२ कडवा, १३ पद् और कुल ४१६ चरण समाहित है । इसमें भगवान के वचन का कैसे पालन करना चाहिए। वह ज्ञात होता है।

(५) सारसिध्धि : यह गुजराती भाषा की पद्य रचना है । ४८ कडवा १२ पद्य इसमें है । इस रचना में सार रुप साक्षात् भगवान की प्राप्ति हेतु, सच्चे संत समागम के बारे में लिखा गया है।

(६) भक्तिनिधि : यह पद्य रचना गुजराती में है । ४४ कडवां, ११ पद, दो सोरठा और एक धोल है । कुल ५०८ चरण है । स.गु. १९०२ चैत्र सुद नवमी (हरि जयंती) के दिन की गई थी । इस में श्रीजी की भक्ति के विषय में सुंदर वर्णन करके भक्ति की महिमा बताये है।

(७) हरिबल गीता : यह गुजराती में पद्य रचना है। जिस में ४४ कडवा, ११

पद तथा ४०० चरणहै । यह प्रत्यक्ष हरि के बल की बलवान गीता है । भक्ति के अलावा सम्पूर्ण मोक्ष के साधन इसमें समावेश है।

(८) हृदय प्रकाश : यह गुजराती की पद्य रचना १५ प्रसंगो में वर्णित है। इसमें हृदय को स्वच्छ, करने तथा हृदय शुद्धि की आवश्यक उपाय बताये गये है।

(९) धीरजाख्यान : गुजराती पद्य रचना में ६४ कडवा, और १६ पद है। कुल ७१७ चरण है। इस रचना में ध्रुव, प्रहलाद, राजा हरिश्चंद्र, यमराजा, राजारतिदेव, विभिषण .... वि अनेक भक्तो ने अनेक प्रकार के दुःखो को धैर्य पूर्वक सहन किये। उसके बारे में बताता गया है।

(१०) हरिस्मृति : गुजराती भाषा की इस रचना में ७ चिंतामणी है । जिस में ३५१ पंक्तियाँ है । इसमें श्रीजी महाराज को कैसे स्मृति में रखे, उस मूर्ति का वर्णन, गुण वर्णन और लीला चरित्र के वर्णन को अच्छे से समझाया गया था।

(११) चौसठ पदी : इस गुजराती पद में आठ-आठ पद के आठ विभाग को मिलाकर ६४ पद है। इसमें श्रीहरि तथा संतो की महिमा वैराग्य, आत्मज्ञान का वर्णन किया गया है।

(१२) गुण ग्राहक : हिन्दी भाषा की यह काव्य रचना है। जिस में १०१ दोहे है। भगवान गुण से खुश होते है। अवगुण से नाराज होते है। इस पद्य रचना में गुणो का महत्व बताया गया है।

(१३) मनगंजन : हिन्दी भाषा में रचित पद्य भाग है। कुल १७८ दोहे है। इसमें शरीर को नगर रुप, जीव को राजा रुप और मन को दो मुख्य रुप में वर्णित है। यह एक रुपक काव्य है।

(१४) हरि विचरण : आठ विश्राम (प्रकरण) वाली हिन्दी में लिखी गयी । यह पद्य रचना भगवान स्वामिनारायण अपने प्रागट्य से लेकर अर्न्तध्यान तक विविध वन, गाँव, नगर, देश, तीर्थ, स्थानो के विचरण अवस्था में लीलाओ का वर्णन किये है।

(१५) अरजी विनय : यह हिन्दी भाषा में लिखी गयी है। इस में कुल १०२, घंट और दोहा है। भगवानने विनयपूर्वक दास भाव से अरजी अर्थात् प्रार्थना का वर्णन किये है।

(१६) कल्याण निर्णय : इस गुजराती पद्य रचना में १८ निर्णय (प्रकरण) है । इस में आत्मकल्याण ही कल्याण है। उसके स्वरुप और प्राप्ति के उपाय बताये गये है।

(१७) अवतार चिंतामणी : इस गुजराती पद्य में ३१ चौपाईयाँ है । भगवान के अनेक अवतारो तथा उनके कार्यो का वर्णन है।

(१८) चिह्न चिंतामणी : इस हिन्दी पद्य रचना में १६ दोहे है। इस काध्य में भगवत्व का आभास ऐसे चरण कमल में स्थित सोलह प्रतीको के चिंतन के विषय में बताया गया है।

(१९) पुष्प चिंतामणी : यह हिन्दी भाषा में ३१ दोहे की रचना है। इस पद्य में ३१ प्रकार के फुलो का वर्णन है। भगवान जहाँ पर पधारे। उस जगह पर चढाने का वर्णन है।

(२०) लग्न शकुनावलि : यह हिन्दी में पद्य रचना है। १७ दोहे है। बारह राशि (लग्न) उसके शुभ फल का वर्णन किया गया है।

(२१) शिक्षापत्री भाष्य : गुजराती भाषा में २६० चौपाईयो में लिखी गयी है। शिक्षापत्री के २१२ श्लोक से विशद शोभा तथा सरल समझा गया है।

(२२) वृत्ति विवाह : इस में गजुराती भाषा में २० पदो का वर्णन है। इस में रुपक द्वारा संसारिक विवाह के बारे में अध्यात्मिक ज्ञान का रसिक वर्णन किया गया है। भगवान के साथ अपने मनोवृत्ति रुपी स्त्री के विवाह का उल्लेख है।

स.गु. निष्कुलानंद स्वामी इस प्रकार २३ पद्य रचनाये करके, प्रत्येक रचना में अलग-अलग मोक्षोपयोगी विषय का वर्णन किये है। जो सरल एवं सर्व साधारण के लिये है। श्रीजी का परम ऐश्वर्य उनके साहित्य में मिलता है । यहाँ पर उनके काव्यो के विषय में अल्प परिचय दिया गया है। जो ज्ञानी भक्तो को अच्छा लगेगा। जय श्री स्वामिनारायण

भूमिदान

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा
(हीरावाडी-बापूनगर)

रे श्याम तमे साचु नाणुं, बीजु सर्वे दुखदायक जाणु रे श्याम ।
..... छे अखंड अलौकिक सुख सारु, ते जोइ-जोई मन मोह्युं मारुं.
धरा धन तम उपर वारु.... रे श्याम ।

स.गु. मुक्तानदं स्वामी रचित गरबी का यह पद हम सभी नियम चेष्टा के पद के साथ नित्य गाते है। इसके बाद भी जो जमीन श्रीहरि को चाहिए। वैसा हम सभी दान नही कर पाते है। लेकिन जिन लोगो ने वास्तव में श्रीहरि में अपना सत्य सुख मानते है। ऐसे कई शूरवीर दानवीर भक्तोने श्रीहरि को धन ही नही धरा का भी दान करके अमर हो गये है। ऐसे भक्त धन्य है। हम सभी को भूमिदान हेतु शक्ति मिले। शास्त्र आधारित लेखो से इस में लेख लिखने का नम्र निवेदन (प्रयास) प.भ. श्री जगदीशभाई सी. पटेल गाँव, ओला, गाँधीनगर) की प्रेरणा से किये है।

सर्व प्रथम तो दान देने में आन्तरिक ऐसे बलवान अन्तःशत्रु लोभ को पहचान कर श्रीहरि कहते है। काम, क्रोध और लोभ ये तीन अंतशत्रु मानव के प्राण को नाश करने वाले कहे जाते है। लालच पाप का घर है। लोभ का सहारा लेकर दूसरे अनंत दोष हो जाते है। जो नरक प्रदान करते है। दान का अभाव यह लोभ से बनता है। समर्थ होकर लालच करना यह मल समान है। अच्छे कार्य में प्रयोग नही करने पर कुमार्ग मे चला जाता है। अनंतकोटी ब्रह्माडं के सम्पूर्ण भूमि के मालिक वास्तव में भगवान ही है। भगवान हमें यदि आवश्यकता से अधिक जमीन दिये है। तो अधिक भूमि को दान कर देना चाहिए। जिससे आप को यश तथा भगवान के धाम की प्राप्ति होगी। सभी भूमि यदि बेटे को ही दे देगे तो वंश परम्परा में कोई पुत्र कुपात्र हो गया तो जमीन सहित सब कुछ बर्बाद कर देगा। इसलिये दान दी गई जमीन जीवात्मा के खाते में स्थायी रुप से जमा हो जाती है।

श्रीहरि का है इसलिये हरि को क्या देना ? ऐसा कहने वाला कृतघ्न है। हरि को कुछ भी नही चाहिए। सत्संग के लिये जो सब कुछ करता है वह समझदार माना जाता है। जो व्यक्ति अधिक दान चाहे। उसे लोभ नही करना चाहिए। दान करना हाथ की शोभा है। संकल्प ले लेने के पश्चात शीघ्र दान दे देना चाहिए . क्योकि शरीर का कभी भी नाश हो सकता है। संकल्प अधूरा रहने पर नर्क भोगना पडता है। बिन सत्संगी भी यदि भूमिदान करत हे तो वह अंत में अक्षरधाम में जाता है। राजा सिवराजसिंह जयसिंह परोपकार के अनेक कार्य किये थे। इसके पुण्य के कारण सत्संग में भृगुजीत हाडा गरासिया के रुप में जन्म लेकर श्रीहरि की साक्षात् सेवा करके, मूली मंदिर में अधिक सेवा प्रदान किये। अंतमें अक्षरधाम की प्राप्ति किये थे। वामन अवतार भगवानजी बटुक बनकर बलिराजा के पास से मात्र तीन पग पृथ्वी मांगे थे। बलिराजा के गुरु शुक्राचार्य ने बलि को चेतावनी भी दिये किये थे तो विष्णु है। तीन पग में सब कुछ ले लेगे। बलिराजा दानव कुल में पैदा हुए थे। वे भी बचन भंग नही किये थे। गुरु का भी त्याग कर दिये थे। दान देने के सर्वोत्तम पात्र विष्णुजी ही है। यह

विचार कर तीन पग मे वामनदेव को सब कुछ दे दिये । लेकिन बदले में भगवान का सदा के लिये बस में कर लिये । पाताल लोक में अपने दरवाजे के सामने स्थायी रुप से भगवान के दर्शन का वरदान प्राप्त कर लिये । अहमदाबाद में मदिर के लिये दुर्लभ एवम कठिन (डिनलप और सर एन्ड्रूज) इन दो अंग्रेज अधिकारियो से विलायत से स्वीकृति लेकर श्रीहरि के मंदिर हेतु स्थायी दस्तावेज कराये तथा भूमिदान मे लिये । ये लोग इसाई धर्म का पालन करने वाले थे । फिर भी सम्प्रदाय से प्रभावित होकर श्रीहरि के लिये सामने से भूदान किये थे । इस सम्प्रदाय का विश्व में सर्वप्रथम यही पर मंदिर बना । मंदिर के मूल अहमदाबाद सार्थक हुआ । मूली में श्रीहरि रामाभाई राजा कहते है, इस लोक में तीन दान उत्तम है । (१) गाय (२) पृथ्वी (३) सरस्वती – विद्या, मांगरोल में अपना मंदिर था । इस लिये श्रीकृष्ण प्रभु का मंदिर यहाँ बनाना है । यह कृष्ण भगवान का प्राचीन स्थान है । रामाभाई राजा खुश होकर बेठे । 'हे महाराज' आप जितना कहे उतनी भूमि आप की है । आज उत्तरायण तथा आप प्रभु दोनो का संयोग अच्छा है । चित्त, वित्त और पात्र ये तीनो का होना कठिन है । चित्त अर्थात दान पुण्य का संकल्प करना कठिन होता है । इस लिये महाराज इस अर्लक तालाब के उपर ही भूमिदान का संकल्प आप जिस स्थान की पृथ्वी पसंद करे । उसको मै लिखित दे दूँ । इसके बाद ही भोजन करुँगा । कितना कठिन संकल्प था । श्रीजी बोले ! जल ले आइये । संकल्प करे । इतने में घेला जोशी वाव में से जल भर कर राजा को संकल्प कराये । और जमीन के मूल मूली सार्थक हो गयी । इस प्रकार भुज, वडताल, जेतलपुर, धोलेरा, धोलेका, जुनागढ और गढडा में मंदिर निर्माण करने के लिये । गंगाराम, सुंदरजीभाई, नारायणगर, जोबनपगी, पाटीदार, गंगा माँ, पूजाजी राजा, रेवासंकर, महाशंकर, मूलजी, दादाभाई, हेमंतसिंह राजा और दादा खाचर आदि भक्तजनो ने श्रीहरि से प्रार्थना करके जमीन और रुपमुद्रा आदि का दान दिये थे । छपैया में धर्मदेव के घर संकुल मे अपना मंदिर है । जहाँ पर जमीन अधिक है । प्रेरणा स्वरुप भक्तजनो के नाम लिखे गये है । दादा खाचर ने तो सर्वस्व अर्पण कर दिया था । लक्ष्मीवाडी का नाम जीवुबा, जिस लक्ष्मी के अवतार रुप मे माना जाता है । उस पर रखा गया है । राधावाव, भक्तिबाग इत्यादि की भूमि हरि को अर्पित की गयी है । जेतलपुर का ब्रह्ममहाल बादशाह के साले ने मात्र एक रुपया में लेकर मंदिर को दिये थे । जेतलपुर की वाडी वहाँ के पाटीदारोने श्रीहरि को अर्पण करके तब श्रीहरिने कहा था । ''हमको सब सेप हले जमीदार बनाये है।''

ऐतिहासिक मंदिर बनने के बाद यशस्वी दावो के दान से मूल सम्प्रदाय के हजारो मंदिर बने है । कई मंदिरो के पास देव के मालिकना हेकली वाडी, खेत, फूलवाडी बगीचा, तथा गौशाला एवम् धर्मशाला है । जिससे ठाकुरजी की थाल, फूलो के हार तथा दूध । आदि की सेवा तथा यात्रिको, संत, भक्तो के ठहरने की सेवा तथा प्रसाद की व्यवस्था की जाती है । हम लोग भी इस परम्परा को बनाये रखे । इससे कोई व्यक्ति भगवान के सुख से वंचित नही रहे । श्रीहरि के गूढ संकल्प के अनुसार उपासना की शुद्धि के लिये पुरुषार्थ की प्राप्ति के लिये मंदिर में प्रस्थापित मूर्तियो का सेवन अनिवार्य है । सत्संग के दृढ स्थापना के लिये ही श्रीहरि प्रत्येक जगह मंदिर बनाने का संकल्प किये थे । इसी कारण से स्वयं श्रीहरि नये नये महामंदिरो का निर्माण कराके स्वरुप की मूर्ति प्रतिष्ठित किये थे ।

उत्तम पवित्र देश तथा उत्तम काल तथा सत्पात्र का स.जी.प्र.-५, अ.-१० में विस्तृत वर्णन किया गया है । इस प्रकार दान करने से अनंत गुना फल प्राप्त होता है । हमे तो एक ही लक्ष्य रखना है कि जो कुछ भी करे करे उससे हमारे उपर श्रीहरि की विशेष कृपा बनी रहे । तथा श्रीहरि द्वारा स्थापित श्रीनरनारायणदेव की पक्की रसीद मिले । ऐसा दान एवम भूदान करे । उपने कीर्ति की वृद्धि या भय लोभ के कारण दान नही करना चाहिए । केवल श्रीहरि के प्रति स्नेह रुपी शक्ति से धर्म के लिये दान देना चाहिए । अपने अपने देश के धर्मवंशी आचार्यश्री के

दस्तावेज के साथ भूमि दे । अपने आराध्य देव श्रीहरि ने भी भी देश विभाग के लेख में मंदिरो का बँटवारा करके दोनो देश के आचार्यो के सौपे है । गद्दी पर धर्मवंशी आचार्य ही देव के प्रतिनिधि है । देव की इच्छा समझकर भूमि का उपयोग कर सकते है । सम्प्रदाय का कोई भी त्यागी या विमुख मार्गी को कभी भी भूमिदान नही करे । यह सम्प्रदाय के संविधान के विपरीत विधा है । भगवान को जैसे ब्राह्मण प्रिय है । उतना तो भगवान अपने शरीर, अन्य देव और देवियाँ और लक्ष्मीजी भी नही प्रिय है । धर्मवंशी आचार्यश्री सदाचारी ब्राह्मण है । त्यागी-गृही सभी के भक्तजनो के गुरुपद पर है । साक्षात् भगवान के बडे भक्त है । श्रीहरि के साथ रक्त का सम्बन्ध है । धर्मदेव के कुल में धर्मवंशी है । श्रीहरि के अपर रुप है । इसलिये भूमिदान जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे पर उनको साथ मे रखकर निर्णय ले । विमुख मार्गीयो को भूमिदान देने से उससे संस्थाओ की वृद्धि होती है । इससे लोग भगवान की पूजा से दूर होकर व्यक्ति पूजा मे लग जाते है । तथा भटक कर पाप करते है । औऱ कराते भी है । कीर्तन में देवानंद स्वामी कहते है कि विवेकी मानव विचार करके देखे । कुपात्र को दान देने का अर्थ यह है कि बीज को ऊसर जमीन में बो रहे है । इसलिये विवेकी नर सुपात्र को दान देता है ।

भूमिदान की यदि अपनी क्षमता नही हो तो प.पू. महाराजश्री के आज्ञानुसार जिस समय निर्माण कार्य चालू हो तो उसमें फुट के आधार पर धन देने से सहकार्य में सहयोगी बन सकते है । मानव के कल्याण के लिये सतयुग में तपस्या, त्रेतायुग में यज्ञ, द्वापर युग में विधिपूर्वक प्रभु की पूजा तथा कलियुग में मनुष्यो के हित के लिये दान कहा गया है । जो मानव दान, तप तथा सत्य सदाचार के साथ व्यवहार करता है । वह स्वर्ग को प्राप्त करता है । स.जी.प्र.३, अ.११ में कहा गया है कि इस लोक में भूमिदान भी महादान है । मनुष्य भूमि दान से सभी मनोरथ पूर्ण कर सकता है । जो व्यक्ति पके अन्न से भरा गोधर्म मात्र जितनी भूमि ब्राह्मण को दान देता है । यह सीमाहीन फल प्राप्त करता है । एक साँढ और सौ गायो जितनी भूमि में बैठ सके । उस भूमि को गौधर्म मात्र कहा जाता है । भूमि देने वाला व्यक्ति पूर्ण रुप से पातकरहित हो जाता है । वह तत्काल अश्वमेघ के समान फल प्राप्त करता है । बुद्धिशाली पुरुष भूमिदान देते समय स्वर्ण, चाँदी, मणी, मोती और दान वाली सामग्री साथ में दान करता है । तथा उसका फल प्राप्त करता है । जो व्यक्ति इस लोक में भूदान करता है । उसकी ग्यारह पीढी तर जाती है । जो व्यक्ति इस संसार में भगवान को उद्देशित करके भूमिदान या पूर्तक्रम भक्ति से करता है । तो वह आन्तरिक फल प्राप्त करता है ।

अपने भूमि देश विभाग के आधार पर श्री नरनारायणदेव को दे । यह जमीन भगवान के मालिकाना हक की हो जाये । यह अनंत काल तक नाश नही होगी । इस भूदाता को अनंतकाल तक फल मिलता रहेगा । सुपात्र विप्र को दान देने पर वह तत्काल हजार गुना फल देता है । तो भवान को दिये गये दान से कितना फल मिलेगा । इसका वर्णन नही किया जा सकात है । इस लिये धनवान गृहस्थ विशेषकर भूमिदान पर ध्यान दे । जमीनन्याय औऱ नीति वाली होनी चाहिए । अन्याय से प्राप्त भूमिदान करने पर उसका फल हीन युक्त होता है । श्रद्धा विना अन्याय से प्राप्त भूमिदान कुपात्र को करने से दाता का विकास नही होता है ।

धर्म कर्ये धन घटे नहि, जेम नदी केरा नीर,
वापरे तेम शुद्ध रहे, अने वधे भरपूर ।

सतपात्र व्यक्ति यदि थोडा भी दान करता है तो उसे भी अधिक फल मिलता है । सुपाल को दान देने से दाता धनवान बनाता है । धन से पुण्य करने पर वैभव प्राप्त होता है । दाता सत्संगी नही होता है । तो वह देव लोक को जाता है । सत्संगी प्रभु के धाम को प्राप्त करता है । कुपात्र को दान देने से दाता दरिद्र बनता है । भगवान सबसे बड़े सुपात्र है । सुपात्र खोजने से अच्छा है कि आँख बंद करके भगवान को भूमिदान तरे । यदि सर्वोत्तम है ।

मूली "उत्सव" का मार्च-अप्रैल अंक विशेषांक के रुप में प्रकाशित होगा

श्री स्वामिनारायण मासिक के सभी पाठको को अवगत किया जाता है कि आने वाले मार्च-अप्रैल २०२३ का अंक मूली ''उत्सव'' विशेषांक के रुप में अप्रैल महीने

श्री स्वामिनारायण भगवान के प्रसादी के गाँव

नारदीपुर

संकलन : प्रफुल खरसाणी

- अहमदाबाद कालुपुर मंदिर से सडक द्वारा १ घंटे १५ मिनट
- अमहादाबाद विमान अड्डे से ४७ मिनट

...दिर का द्वार पूरव की तरफ है। भगवान श्री स्वामिनारायण इस गाँव में अपने मुनि मंडल तथा पार्षदो के साथ पधारकर इस पवित्र धरा को अपने चरण से पवित्र किये है। श्रीहरि दंढाव्य देश का भ्रमण करते हुए पलियड गाँव सेनारदीपुर आये थे। श्रीहरि अपने गाँव में पधारे है। ऐसा सुनकर नारदीपुर में रहने वाले नचिकेत ब्राह्मण श्रीहरि की पूजा करने के लिये सामने गये। और श्रीहरि का अक्षत, चंदन आदि पदार्थो से पूजनक रके अपने घर पर लाये थे। श्रीहरि संतो के साथ नचिकेत भाई के घर से गुलाबचंद और सुखचंद नामक भक्तो के घर आये थे। ऐसे प्रभावशाली गाँव में श्रीहरि लगातार पाँच दिन तक हजारो ब्राह्मणो को भोजन कराके दान, दक्षिणा देकर खुश किये थे। श्रीहरि वहाँ से भक्तजनो का मनोरथ पूर्ण करने के लिये लाघणज गाँव में भी गये थे।

नारदीपुर के तीताराम भगत की दृढता :

नारदीपुर में श्रीहरि का भजन करने वाले तीताराम नाम के विप्र भगत रहते ते। इस गाँव में मात्र एक तीताराम एकान्तिक श्रीहरि के भक्त थे। शेष लोग श्रीहरि से विमुख रहते थे। इस गाँव के लोग विषय-वासना मे लिप्त, सत्संगियो से द्वेष करने वाले तथा पाप कर्म करने वाले, वे सभी तीताराम का मजाक करते थे। वे लोग कहते थे कि हम लोग कभी इतना महान संत नही देखे है। यह तीताराम सदैव परनारी तथा पराया धन का त्याग करता है। यह भक्त सदैव स्वामिनारायण नामक महामंत्र का उच्चार करता रहता है। हमेशा श्रीहरि की भक्ति में लगा रहता है। इसे अंत समय भगवान स्वामिनारायण लेने आयेगे। उस समय हम लोग भी भगवान स्वामिनारायण लेने आयेगे उस समय हम लोग भी भगवान का दर्शन करेगे। दिव्य विमान भी हम सभी देखेगे। विमान का दण्ड पकडकर हम सभी भक्त के साथ दिव्यधाम में जायेगे। भक्त का कुछ समय के बाद अंतकाल आया। तब श्रीहरि सूर्य समान तेजस्वी दिव्य विमान में बैठकर तथा अन्य विमान में बिराजमान तेजवाले ब्रह्मानंद स्वामी आदि संत उस भक्त को लेने आये। उस विमान के तेज पूज से पूरा गाँव ढक गया। सभी लोग तेज पुंज देखकर धबरा गये। यह क्या है। कहाँ से आया ? और कहने लगे हम लोग तीतारम का उपहास करते थे। उसी समय भगत तीताराम उन लोग से बोले। आप लोग दृष्टस्व भाव के कारण पहले हमारा मजाक करते थे। और कहते थे कि इस भक्त को भगवान श्री स्वामिनारायण जब विमान लेकर ले जाने आयेगे तो विमान का दण्ड पकडकर उनके धाम में जायेगे। क्षमा करे अब हम इस विमान से आप सभी को श्रीहरि के अक्षरधाम में बैठाकर अवश्य ले जायेगे। आप सभी को आना हो तो आप सभी विमान पर बैठ जाये। समय व्यर्थ नही करे। मृत्यु के भय के कारण दुःख जानकर वे लोग तीताराम से कहे, हे भक्त आप सच्चे हो। हमारा अपराध माफ करदे। श्री स्वामिनारायण

(पेईज नं. १५)

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

श्री यज्ञ पूजन - जनलकी-२०२३

दि. २९-०१-२०२३ प.भ.श्री तेजश्री, राजश्री, मौलिककुमार भावसार (महेसाणा)

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग की सूची-जनवरी-२०२३

ता. ०१-०१-२०२३ प.भ.श्री धनसुख खीमजी भुडीया (फोटडी-कच्छ) तथा दिनेश कांति हालाई (केरा-कच्छ)

ता. १४-०१-२०२३ प.भ.श्री उषा मनसुख मावजी वेकरीया (सुरजपुर-कच्छ) वर्ते - पूर्वी मनसुख वेकरीय (यु.के.

दि. १८-०१-२०२३ प.भ.श्री जीतेस मावजी राघवाणी (बलदीया-कच्छ) तथा दिपीका करशन केराई (लंडन)

ता. २०-०१-२०२३ प.भ.श्री परेशभाई (प्रेम सखी) रमणभाई पटेल (कुंडलवाले)

ता. २१-०१-२०२३ प.भ.श्री पारुलबेन निलेशभाई पटेल (यु.एस.ए.)

ता. २२-०१-२०२३ प.भ.श्री रेणुकाबन नवीनचंद्र रावल तथा निवुबेन खारीवाला तथा काश्मीराबेन त्रिवेदी (यु.एस.ए.)

ता. २७-०१-२०२३ प.भ.श्री दिक्षीत हरिकृष्णभाई पटेल (यु.एस.ए.)

ता. ३१-०१-२०२३ प.भ.श्री केनील राकेशभाई पटेल (ओस्ट्रेलीया)

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

बारहवाँ वार्षिक पाटोत्सव

फाल्गुन सुद-३ ता. २२-०२-२०२३ बुधवार

कार्यक्रम

समहू महापूजा : दोपहर ३ बजे से ५-३० बजे तक

सत्संग सभी और आशीर्वचन - शायं ५-३० से ६-३० बजे तक

भोजन प्रसाद : शायं ६-३० पर

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है ।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं ।

સંપ્રદાયમાં એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.

મ્યુઝિયમ મોબાઈલઃ- ૯૮૭૯૫૪૯૫૯૭, પ.ભ. પરષોત્તમભાઈ - દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬

www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com

श्री स्वामिनारायण

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) धर्नुमास पारायण का अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "भगवान मनुष्य चरित्र क्यो करते है"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

भगवान के लीला चरित्र का श्रवण तो सभी ने किया है ? तो कभी ऐसा सोचे कि भगवान मनुष्य चरित्र क्यो करते है ? जो भक्त भगवान के प्रति पूर्ण समर्पित होते है। उनका मनोरथ पूर्ण करने के लिये भगवान मानव जन्म ग्रहण करते है। तथा मानव चरित्र को करते है। कई लोगो को ऐसा लगता होगा कि भगवान ऐश्वर्य बताकर चरित्र कर सकते है। लेकिन भगवान ऐश्वर्य बताकर यदि चरित्र करते है। तो सच्चे भक्त को कोई परेशानी नही होती है। लेकिन भगवान के वह भक्तजनो कमजोर होते है। वह भगवान का दोष देख लेते है। ग.प्र.प्र. ७२ वचनामृत में आता है कि शुकजी जब रासपंचाध्यायी का वर्णन किये। तब राजा परीक्षित को संशय हो गया और उन्होने प्रश्न किया कि ''भगवान तो धर्म की मर्यादा के स्थापन हेतु प्रगट हुए थे। उन्होने परनारी का संग करके धर्म को क्यो तोडे ? इस प्रकार दोष लिये। और शुकजी तो सोच-विचार कर भगवान का गुणगान किये थे। जिस कामदेवने ब्रह्मा आदि देवताओ को जीतकर अपने वश में कर लिये थे। इससे कामदेव को गर्व हो गया था। इस गर्व को तोडने के लिये भगवानने कामदेव को चुनौती दिये। यह इस प्रकार की बात है। जैसे कोई राजा अन्य राजाको सैन्य सहायता देकर उससे युद्ध के लिये प्रस्थान करे। उसी प्रकार कामदेव रुपी शत्रु से लडने के लिये, सामग्री मोर से दिये। कामदेव का बल जब स्त्री का सम्बन्ध होता है तो तब अधिक उसमें भी शरद काल में रात्रि के समय कामदेव का बल अधिक हो जाता है। स्त्री के रंग विलास के शब्द सुनने तथा स्त्री का रुप देखकर स्त्री का स्पर्श करने पर इससे कामदेव का बल बढ़ता है। यह सभी सामान कृष्ण भगवान ने कामदेव को देकर उन्हे जीता लिये। तथा अखंड ब्रह्मचारी की तरह वह खडे रहते थे। इस प्रकार कामदेव का गर्व समाप्त किये। ऐसे अलौकिक शक्ति भगवान के अलावा किसी में सम्भव नही है। ऐसी अधिक भगवान की शक्ति को जानकर शुकजीने भगवान का गुणगान किये। और राजा परीक्षित को यह बात समझ में नही आई। इस कारण से दोष पैदा हुआ।

यहाँ परो वचनामृत में बात आई है। यदि राजा शक्ति शाली हो तो शत्रु को अपना हथियार देकर भी साथ युद्ध करता है। पहले के समय में युद्ध के नियम होते थे। आप किसी के साथ यदि युद्ध करते तो सामने के पास युद्ध सामग्री कम होने पर उसे सामग्री देकर युद्ध करना पडता था। तो यह सत्य ईमानदारी वाला युद्द होता था। इसे वास्तव में युद्ध का न्याय नही कहा जाता है। अधिक शक्तिवाला व्यक्ति अवश्य विजय प्राप्त करता है। इस लिये यहाँ पर ''भगवानने ऐसा किया कि ''शरदकाल'' चयन किये। रासोत्सव किये। अर्थात् कामदेव को अधिक बल दिये। और जब काम की शक्ति तीव्र हो तभी ब्रह्मचारी की तरह काम को पराजित करते दृष्टा बने। और कामदेव पर विजय प्राप्त किये। और यह बात राजा परीक्षीति को समझ मे नही आयी। इस लिये ऐसा दोष दिखाई दिया था। जो भगवान के सच्चे भक्त होते है। भगवान के इस गूढ रहस्य पर विचार करते है। और परम पद को प्राप्त करते है। जो दोष ग्रहण करता है। वह पतन की तरफ जाता है। यदि भगवान सम्पूर्ण ऐश्वर्य लेकर आये तो हम सहन नही कर सकते है। क्योकि ? जिसके प्रत्येक रोम में अनंत कोटि ब्रह्माडं के तेज की तरह उडता है। तो उनको तेज हम कहा सहन कर सकते है ? अपने घर में उजाला करना हो तो दीपक जलाना पडता है। वहाँ पर वडवानल की आवश्यकता नही पडती है। इससे सब कुछ भस्म हो जायेगा। वडताल के तीसरे वचनामृत में आता है कि वडवानल आग समुद्र के जल में होती है। लेकिन समुद्र के जल से यह बुझता नही है। जिसे सागर भी बुझा नही सकता है। तो घर में प्रकाश के लिये दीपक ही जलाया जा सकता है। वहाँ पर वडवानल नही प्रगट कर सकते है। इस प्रकार भगवान के प्रति पूर्ण समर्पित भक्त हो तो उसे सुख देने के लिये। मानव अवतार ग्रहण करना

पडता है । तथा मानवीय चरित्र करना पडता है । तो भक्त उसके पास जा सकते है । इस लिये मानव चरित्र करना पडता है इसमें हमे 'अभाव' नही रखना चाहिए । भगवान ने जो लीला किये है । उसे याद रखना चाहिए । संस्मरण सरलता से याद होता है इस लिये भगवान की प्रतिदिन एक लीला का वाँचन और मनन करना चाहिए । मोबाईल से सुने या शास्त्र का अध्ययन करे । आप को जो अनुकुल हो उस लीला का वाचन करे । औऱ ऐसा अनुभव करे कि यह प्रसंग आप के साथ हो रहा है । ऐसा करने पर लीला याद हो जायेगी । उदाहरण के रुपमें यदि याद रखना है । तो यहाँ पर हम किसी व्यक्ति को नाम से जानते है । पहचान के लिये नाम होता है । वह व्यक्ति कोई कार्य किया हो । उसी तरह का कार्य देखकर वह पहला व्यक्ति याद आ जाता है । स्थायीरुप से याद दूसरे को हो जाता है । जैसे अभी हम लोग कथा में ''घी'' की बात को सुना है । आप प्रतिदिन भोजन बनाती है न ? आप जब भी घी का प्रयोग करेगी । तो भगवान की लीला याद आयेगी । इस तरह सरलता से याद हो जाता है । अपनी तो लाटरी लग गयी है । किसी को धन कमाने के लिये कितना अधिक श्रम करना पडता है । यदि लाटरी लग जाये तो !! घर बैठ कर धन मिल जाता है । कुछ कार्य नही करना पडता है । जो हमे वंश परम्परा से प्राप्त होता है । उसमें परिश्रम नही करना पडता है । हमे जिस प्रकार सम्पति वंश परम्परा से मिलती है । उसी तरह पीढी दर पीढी सत्संग भी वारसागत मिला है । अपने बुर्जुग लोग संस्कार घर में लाये है । इस लिये सब कुछ प्राप्त हुआ है । जैसे पैसे की वचत करते है । कमाने के संरक्षण हमें करना चाहिए । सोने की अँगूठी को हम लोग सुरक्षित रखते है न ? हमे सत्संग रुपी भेट जो मिली है । वह अमूल्य है । हम जब सत्संग में मजबूत होगे । तो सत्संग रुपी पूंजी को संरक्षित रख पायेगे । हम लोगो के पास तो सत्संग रुपी पूंजी है । वह किसी के पास नही है । हम लोग संसार से एक सीढी उपर स्थित है । क्योकि इस संसार में सभी के दुःख-सुख समान है । सभी को कम अधिक कष्ट अवश्य है । किसी को सुख-दुःख नही है ।ऐसा कोई मनुष्य नही है । इस का अर्थ यह है कि 'सुख' और 'दुःख' संसार में सभी के पास है । इसमें समानता है । लेकिन एक वस्तु में समानता नही है । वह वस्तु हम लोगो के पास ही है । दूसरे लोगो के पास नही है । हम लोग (अर्थात् प्रत्येक सत्संगी) के पास नरनारायणदेव है । हमारे भरत खंड के राजा अनंत कोटी ब्रह्मांड के अधिपति है । जो दूसरे के पास नही है । इस लिये हम लोग अन्य लोगो से एक सीढी उपर है । लेकिन इस बात का धमंड था अहंकार नही रखना है । इसका स्वाभिमान हमे होना चाहिए । इस प्रतिदिन एक लीला चरित्र पढना चाहिए। तथा सुनना चाहिए । पढे अनुभव करे, और खुश रहे । दूसरे को भी खुश रखे ।

(अनु. पेईज नं. १२ से आगे)

भगवान अपने पार्षदो सहित आप को लेने आये है । ये स्वयं प्रत्यक्ष भगवान है । इस लिये भक्तराज ! स्त्री, पुत्र, भाई औऱ द्रव्य मे आसक्त रहने वाले हम सभी का त्याग करने के लिये शक्तिमान नही है । इस समर्थ स्वामिनारायण श्रीहरि का सहारा लेकर । धर्म में रहकर हम लोग लगातार भजन करेगे । इस प्रकार उन सभी की बात सुनकर श्रीहरि अपने भक्त तीताराम से बोले विषयासक्ति का त्याग करना कठिन है । मंत्र रुप में मुस्कराये । तीताराम भक्त से खुश होकर श्रीहरिने सूर्य समान दिव्य प्रकाशवान विमान में बैठाये । भक्तवत्सल श्रीहरि अपने भक्त, तपस्वी को दुर्लभ ऐसे दिव्य ब्रह्मपुर धाम में ले गये । श्रीहरि का आश्चर्यजनक दिव्य ऐश्वर्य देखकर वहाँ पर कई लोग ने श्रीहरि का आश्रय किया ।

श्रीजी महाराजने सं. १८६४ में जेतलपुर मे सात दिन तक महारुद्र यज्ञ किये । श्रीहरि के आज्ञानुसार गोविंद स्वामी नारदीपुर गाँव में नचिकेत (छोटेभाई) ब्राह्मण को यजमान बनाये थे ।

नारदीपुर के भक्तजनो के नाम स.गु. निष्कुलानंद स्वामी ने ''भक्तचिंतामणी'' नामक ग्रंथ में प्रकरण ११९ में निम्नानुसार जोडे है।

द्विज गुलाबचंद, सुरवचंद, वल्लभदास जीवराम वृंद ॥७२॥
हरिजन हरि कुंवर्य बाई, एह जन नारदीपुर मा मांई ॥

साधारण भक्तो के नारदीपुर में श्रीहरि आकर सुखी किये है । अपने चरण कमल के रज से गाँव की भुमि को दिव्यमान किये । कई हरिभक्तो को अक्षरधाम का अवर्णनीय सुख दिये । इस प्रकार इस गाँव की मिट्टी अधिक प्रभावशाली और प्रसंशनीय है ।

सत्संग समाचार

कुबडथल गाँव में शाकोत्सव

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण तथा भरतखंड के राजाधिराज श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकासदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से ता. २९-१-२३ रविवार के दिन कुबडथल गाँव में दिव्य शाकोत्सव मनाया गया।

इस अवसर पर प.पू. १०८ भावि आचार्य श्री व्रजेन्द्रप्रसाजी महाराजश्री पधारकर आशीर्वाद दिये थे । जेतलपुर, नारणपुरा, महेसाणा, मूली, कोटेश्वर, भात आदि धामो से संत पधारकर आशीर्वाद दिये थे । इस दिव्य शाकोत्सव के यजमान प.भ. केनोप भूपेन्द्रभाई प्रभुदास पटेल परिवार ने लाभ लिया था । गाँव के तथा आस-पास के गाँव के भक्तोने शाकोत्सव का लाभ लिये थे ।(शा. स्वामी धर्मनंदनदासजी - जेतलपुरधाम)

उवारसद गाँव में पाटोत्सव

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण तथा भरतखंड के राजाधिराज श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री तथा पूरे धर्मकुल के आज्ञा-आशीर्वाद से जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकासदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से ता. १७-१-२३ से २१-१-२३ तक उवारसद गाँव के मध्य बाईयो के मंदिर का १२४ वाँ पाटोत्सव और बहनो के मंदिर का १९ वाँ पाटोत्सव के अर्न्तगत श्रीमद सत्संगिभूषण ग्रंथ की कथा का प्रबन्ध किया गया गया था । जिसके वक्ता स.गु. शा. स्वामी धर्मनंदनदासजी ने कथा का अमृत रसपान कराये थे । ता. २७-१-२३ के दिन पाटोत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया।

११ वे पाटोत्सव के यजमान प.भ. श्री चंद्रकांतभाई रतिभाई पटेल, १० वे पाटोत्सव के यजमान प.भ. श्री अल्पेशभाई कचराभाई पटेल, ९ वे पाटोत्सव के यजमान प.भ.श्री घनश्यामभाई कनुभाई पटेल शेष छोटे-बडे यजमानो के सहयोग से भव्य पूर्वक मनाया गया । जिसमे धाम-धाम से संतो ने सभी आशीर्वाद प्रदान किये थे । (शा. स्वामी धर्मनंदनदासजी - जेतलपुरधाम)

दहेगाम में भव्य शाकोत्सव

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण तथा भरतखंड के राजाधिराज श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद उसी प्रकार जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकासदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से ता. ३१-१२-२२ शनिवार के दिन देहगाम में मध्य विशाल शाकोत्सव मनाया गया। दहेगाँव के युवको द्वारा सुंदर प्रयास तथा हरिभक्तो द्वारा नीलकंठ महादेव मंदिर में शाकोत्सव पूर्ण किया गया था । इसमें जेतलपुर, सलकी, हिंमतनगर, गढडा आदि धामो से संत लोग आये थे । तथा आशीर्वाद भी दिये । कई भक्तोने इस अवसर का लाभ लिये । (शा. स्वामी धर्मनंदनदासजी - जेतलपुरधाम)

भावपुरा गाँव में विजय स्तम्भ तथा शाकोत्सव

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण तथा भरतखंड के राजाधिराज श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकासदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से ता. १६-१-२३ दिन सोमवार भावपुरा गाँव में मध्य में आगामी पंच दशाब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में अखंड धुन पूर्णाहुति बाजे गाजे के साथ विजय ध्वज की ध्वजा को पूरे गाँव में धुमाकर पूजन के साथ स्थापना तथा दिव्य शाकोत्सव मनाया गया।

अखंड धुन के यजमान पद पर प.भ. भीखाभाई नथुदास पटेल, विजय स्तम्भ के यजमान पद पर प.भ. महेन्द्रभाई शिवरामदास पटेल, शाकोत्सव के यजमान प.भ. परसोत्तमभाई त्रिभोवनदास पटेल आदि परिवारोने लाभ उठाया था । इस अवसर पर जेतलपुर, नारणपुरा, कालुपुर, कलोल, मेहसाणा, बावला, उवारसद आदि धामो से संत आकर आशीर्वाद दिये थे।

आने वाले ता. १३-२-२३ से १५-२३ तक पंचदशाब्दी महोत्सव के अन्तर्गत वैराग्य मूर्ति स.गु. निष्कुलानंद स्वामी रचित वचन विधि कथा का पारायण का प्रबन्ध किया गया है । प्रत्येक भक्त अवश्य लाभ ले । आप सभी को निमंत्रण है । (शा. स्वामी धर्मनंदनदासजी - जेतलपुरधाम)

नारणपुरा मंदिर (अहमदाबाद) का २९ वाँ पाटोत्सव

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण तथा भरतखंड के राजाधिराज श्री नरनारायणदेव तथा नारणपुरा में बिराजमान श्री

घनश्याम महाराज की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री तथा पूरे धर्मकुल के आज्ञा-आशीर्वाद से नारणपुरा मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकासदासजी तथा स.गु. स्वामी विश्वप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन में ता. २१-१-२३ से ३१-१-२३ तक नारणपुरा मंदिर का २९ वाँ वार्षिक पाटोत्व उल्लास पूर्वक मनाया गया । जिस में पांच दिन का विदूरनिती कथा पारायण का प्रबन्ध किया गया था। जिस के वक्ता शा. स्वामी धर्मनंदनदासजी थे । उन्होने कथा का अमृत रसपान कराया था।

२९ वाँ वार्षिक पाटोत्सव के यजमान पद पर प.भ. श्री स्मिताबेन राजेशकुमार भावसार, प.भ. श्री राजेशकुमार रतिलाल भावसार परिवार ने लाभ उठाया था । इस अवसर पर प.पू. १०८ भावि आचार्य श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पधारकर ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारे थे । सभी हरिभक्तोने आशीर्वाद दिये । कई हरिभक्त दर्शन का उत्तम लाभ लिये । (शा. स्वामी धर्मनंदनदासजी - जेतलपुरधाम)

अनेक गाँव में शाकोत्सव तथा पाटोत्सव के कार्यक्रम

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण तथा भरतखंड के राजाधिराज श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री तथा पूरे धर्मकुल के आज्ञा-आशीर्वाद से जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकासदासजी के मार्गदर्शन प्रेरणा से अहमदाबाद देश के कई गांवो में दिव्य शाकोत्सव मनाया गया था।

ता. १-१-२३ को निकोल गाँव से (अबमदाबाद) तथा आदिश्वर नरोडा, शायं विरमगाम, हिंमतनगर, ता. ७-१-२३ को लाडपुर गाँव में, ता. १३-१-२३ को मकाखाड, ता. ११-१-२३ को असलाली, ता. २७-१-२३ को वडथल गाँव में भव्य पाटोत्सव मनाया गया था । (शा. स्वामी धर्मनंदनदासजी - जेतलपुरधाम)

नवा वाडज मंदिर

श्री नरनारायणदेव के अधिकार के अन्तर्गत श्री स्वामिनारायण मंदिर नवा वाडज में प.पू. १०८ लालजी महाराजश्री के सानिध्य में ता. २४-१-२३ के दिन भव्य शाकोत्सव मनाया गया था । ४००० जितने हरिभक्तोने प्रसाद का लाभ प्राप्त किये ।(कोठारीश्री)

उनावा मंदिर में शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. महंत पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) के प्रेरणा-मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा में ता. १४-१-२०२३ के दिन ठाकुरजी के समक्ष भव्य शाकोत्सव और कथा हुई । जिस के यजमान प.भ. कृणाल रमेशभाई पटेल परिवार ने लाभ उठाया । इस अवसर पर हरिभक्तोने कथा-वार्ता और शाकोत्सव का लाभ उठाये थे ।(फेनिल मूयरभाई पटेल - रामदास बापा परिवार)

मुबारकपुर गाँव में कथा पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. महंत पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) के प्रेरणा से यहाँ मुबारकपुर में श्री स्वामिनाराण मंदिर मे ता. १२ से १५ जनवरी के मध्य श्री विदूरनीति गन्त की त्रिदिवयसीय कथा महंत स.गु. शा. स्वामी यज्ञप्रकाशदासजी (कलोल) के वक्ता पद से हुई ।पूरा गाँव इस अवसर पर भाग लिया था ।(महंत श्री देव स्वामी - उनावा)

बिलोदरा गाँव में स्वामिनारायण वाडी का शिलान्यास

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. महंत पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) के प्रेरणा से बिलोदरा गाँव में पूरे गाँव के लिये अति आवश्यक वाडी की शिलान्यास विधी पूर्ण की गई । इस में माणसा विधान सभा के सदस्य श्री जयेशभाई पटेल विशेषकर आये थे । (महंत श्री देव स्वामी - उनावा)

रामोल जामफलवाडी दशाब्दी महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. महंत पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) की प्रेरणा मार्गदर्शन से यहाँ रामोल जामफलवाडी श्री स्वामिनारायण मंदिर का दशाब्दी महोत्सव विधिवत रुप से मनाया गया था । इस अवसर पर ता. १६-१-२३ से १९-१-२३ के मध्य स.गु. निष्कुलानंद स्वामी रचित धीरजाख्यान रात्रि कथा स.गु. शा. स्वा. सत्यसंकल्पदासजी (कोटेश्वर-गुरुकुल) के वक्ता पद से पूर्ण हुई । यहां के सभी हरिभक्तोने सुंदर सेवा करके ठाकुरजी तथा धर्मवंशी की कृपा से पात्र बने ।(महंत श्री देव स्वामी - उनावा)

सोनारडा गाँव में नये मंदिर में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. महंत पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) की प्रेरणा मार्गदर्शन से सोनारडा गाँव में नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. लालजी महाराजश्री के कर कलमो द्वारा ता. १८-१-२३ के दिन मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर ता. १६ जनवरी से १८ जनवरी २०२३ तक श्रीमद् भागवत त्रिदिवसीय पारायण पू. स.गु. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी के वक्ताप द से पूरी की गयी । इस

अवसर पर बहनो को दर्शन और आशीर्वाद देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री आयी थी । पूरा गाँव तन, मन और धन से सेवा दिये थे । पू. पी.पी. स्वामी संत मंडली के साथ आये थे । (देव स्वामी महंतश्री - उनावा)

गवाडा श्री स्वामिनारायणमंदिर का ४१ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. महंत पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) की प्रेरणा मार्गदर्शन में श्री स्वामिनारायण मंदिर गवाडा का ४१ वाँ पाटोत्सव पूरे उल्लास से मनाया गया । इस अवसर पर २७-१-२३ से ३१-१-२३ तक श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण स.गु. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) के वक्ता पद से पूर्ण हुई ।

अन्य सुंदर आयोजन में श्री महाविष्णुयज्ञ और १६ संहिता पाठी बैठे थे । इसकी सुंदर व्यवस्था शा. देव स्वामी (उनावा) और भव्य प्रदर्शन किये थे। इसकी व्यवस्था स्वामी धर्मस्वरुपदासजी सम्भाले थे । ता. २८-१-२३ को प.पू. लालजी महाराजश्री आये थे । प्रसन्न होकर संत-हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये थे । ता. ३१-१-२३ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारकर सभी को आशीर्वाद दिये थे । इस अवसर पर सभा का संचालन कोटा के युवा मंहत शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजी और महेन्द्र भगत सम्भाले थे । अन्य सास्कृतिक कार्यक्रम डायरा आदि अच्छे से हुआ था । पूरे गाँव के सुंदर प्रबन्ध से यह अवसर सुंदर रुप से पूर्ण हुआ । (शा. देव स्वामी - उनावा महंतश्री)

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

मागसर सुद-१ प.भ. प्रविणभाई रणछोडभाई पटेल (असलाली). **मागसर सुद-२** प.भ. पार्थ जयंतीभाई पटेल, प.भ.अ.नि. सेजलबेन सागरभाई (राजपुर-डीसा). **मागसर सुद-३** प.भ. दशरथभाई रेवाभाई पटेल (डुंगरी), प.भ. डाह्याभाई गोवाभाई चौधरी (मकाखाड). **मागसर सुद-४** प.भ. फुलबाईबेन तथा जीवाभाई खूट (जरगली), प.भ. हितेषभाई रतीभाई पटेल (अमदावाद), प.भ. वल्लभभाई पोपटभाई खिचडीया (निकोल), प.भ.अ.नि. नयनभाई पंड्या (अमदावाद), प.भ. तुषारभाई चौधरी (प्रतापपुरा). **मागसर सुद-५** प.भ. निमेषभाई वाडीलाल ठक्कर (केसरडी), प.भ. निताबेन राजेशभाई पटेल (गोरासु), प.भ.अ.नि. रणछोडभाई भगत (सिध्धपुर). **मागसर सुद-६** प.भ. संजय बळदेवभाई पटेल (मोटेरा), प.भ.अ.नि. चंदुभाई सांगाणी (अमदावाद), प.भ.अ.नि. राजबाई मनजीभाई पटेल (नडीयाद). **मागसर सुद-७** प.भ. वल्लभभाई गोरधनभाई डोबरीया (ढाकणीया). **मागसर सुद-८/९** प.भ. मनजी धनजी राबडीया (कच्छ), प.भ. भीखाभाई मूळजीभाई क्याडा (निकोल). **मागसर सुद-१०** प.भ. मीनाबेन कल्पेशभाई पटेल (चांदखेडा), प.भ. प्रणव अतुलकुमार भावसार (अमदावाद), प.भ. महेशभाई हिरालाल पूजारा, प.भ. अश्विनभाई पटेल (राजकोट). **मागसर सुद-११** प.भ. सरोजबेन वी. दवे (अमदावाद), प.भ. मयंकभाई कामदार (पोरबंदर). **मागसर सुद-१२** प.भ. मेहुलभाई एन. आर. पटेल (गांधीनगर), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ), प.भ.अ.नि. निधीबेन लालजी हिराणी (कोडकी-कच्छ), श्री नरनारायणदेव युवक मंडळ (अमदावाद), प.भ. हंसाबेन पटेल (भुज-कच्छ). **मागसर सुद-१५** प.भ. हेल्ली अश्विनभाई शिरोया (अमदावाद), प.भ. विजय ब्रिजेशभाई भावसार (न्यु राणीप), प.भ. किरीटभाई डाह्याभाई पटेल (झुंडाल), प.भ. श्याम नारण गोपाल वरसाणी (सामत्रा-कच्छ).

मागसर वद-१ प.भ. हित संजय नायक, प.भ. हितेषभाई रमणभाई पटेल (झुंडाल), प.भ. सुशीलाबेन किरीटभाई पटेल (अमदावाद), प.भ.अ.नि. भीमजी देवजी गोरसीया (सुखपर-कच्छ). **मागसर वद-२** प.भ. आकाशभाई चोकसी (अमदावाद). **मागसर वद-३** प.भ. सरोजबेन जीज्ञेशभाई (गवाडा), प.भ. रतन माताजी (माणेकपुर), प.भ. रविन्द्रभाई त्रिभोवनभाई पटेल (वडोदरा), प.भ. खीमजीभाई वशरामभाई वडगामा, प.भ. मयुर चिनुभाई पटेल (अमदावाद). **मागसर वद-४** प.भ.अ.नि. हरिवदन रतनलाल शेलत (अमदावाद). **मागसर वद-५** प.भ. भूपेन्द्र हिरजी भुडीया (फोटडी-कच्छ). **मागसर वद-६** प.भ. सरलाबेन हरिप्रसाद पटेल (खेरोल), प.भ.अ.नि. मंगुबेन नारणभाई पटेल (सैजपुर). **मागसर वद-७** प.भ. जयंतीभाई लालजीभाई हिरपरा (निकोल). **मागसर वद-८** प.भ. जयंती वाघजी हालाई (मेधपर-कच्छ), प.भ. केसरबाई करशन वरसाणी (रामपर-वेकरा-कच्छ), प.भ.अ.नि. शिवम विक्रांत अरविंदभाई पटेल (अमदावाद). **मागसर वद-९** प.भ. बीनाबेन योगेशभाई धोळकिया (अमदावाद), प.भ.अ.नि. दिपकभाई प्रेमजी (माधापर-कच्छ). **मागसर वद-१०** प.भ. पटेल मनसुखभाई हरजीभाई (अमदावाद), प.भ. वल्लभ भगत (मांडवधार), प.भ. वसंतभाई रावजीभाई अमीन (अमदावाद), प.भ. हसमुखभाई रमणभाई पटेल (झुंडाल), प.भ.अ.नि. कंकुबेन देवजीभाई पटेल (रतनपुर), प.भ. रश्मिका तीर्थकुमार, मेघल किशनकुमार (अमदावाद), प.भ. परसोतमभाई विराभाई ढोला (भावनगर), प.भ. रजनीकांत आर. त्रिवेदी, प.भ. प्रतापभाई जे. परमार (बलोल-भाल). **मागसर वद-१२** प.भ.अ.नि. ईलाबेन सुखडीया (निकोल), प.भ. आनंदीबेन बाबुभाई पटेल (नरोडा), प.भ. ध्यान दिनेशभाई हालाई (मांडवी-कच्छ), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ), प.भ. विणाबेन नरेशभाई वोरा (अमदावाद), प.भ.अ.नि. प्रभाबेन कुंवरजीभाई (अमदावाद), प.भ. बाल गोपाल घनश्याम (अमदावाद), प.भ. मयंकभाई कामदार (पोरबंदर). **मागसर वद-१३** प.भ. अ.नि. जुगलभाई प्रविणभाई पारेख. **मागसर वद-३०** प.भ.अ.नि. मणीबेन अमृतभाई चौधरी (धमासणा), प.भ. शारदाबेन रमणीकलाल सोनी (अमदावाद), प.भ. प्रदिपाबेन तथा अरूणाबेन (अमदावाद), प.भ. चिरागभाई धीरूभाई प्रजापति (अमदावाद)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

गवाडा श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव के अवसर पर सभा में आशीर्वाद देते प.पू. महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री की पूजा करते हरिभक्त।

वडनगर मंदिर षष्टिपूर्ति महोत्सव के अवसर पर सभा में आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री।

विसनगर मंदिर पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी की आरती उतारते प.पू. लालजी महाराजश्री।

नारणपुरा मंदिर पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी की आरती करते प.पू. लालजी महाराजश्री।

दोरडा मंदिर के पाटोत्सव पर ठाकुरजी का अभिषेक दर्शन।

छपैया में श्री घनश्याम महाराज को अभिषेक करते और यु.पी. सांसद श्री बृजभूषण शरणसिंह को आशीर्वाद देते प.पू. बड़े महाराजश्री।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2021-2023
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2023

श्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय के देश-विदेश के हरिभक्तो के आग्रह पर उनकी सुविधा के लिये ऑनलाईन डोनेशन
कालुपुर मंदिर की आफिशियल वेबसाइट पर नीचे दिये लिंक द्वारा कर सकते है।
http://www.swaminarayan.in/donation